गोवर्धन कथा — चार अध्यायों का पुनर्कथन

Govardhan Puja Katha — Four-Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Bhagavata Purana 10.24, revision 183696 (controlling electronic witness). Also compared: Sanskrit Wikisource contributors — Bhagavata Purana 10.25, revision 97324 (controlling electronic witness); Sanskrit Wikisource contributors — Bhagavata Purana 10.26, revision 97328 (controlling electronic witness); Sanskrit Wikisource contributors — Bhagavata Purana 10.27, revision 97339 (controlling electronic witness); Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — licence for the Wikisource adaptation and Valkala language layers; GRETIL — Bhagavata Purana (comparison-only; noncommercial licence, not reused as text).

Valkala's own retelling of the katha in Bhagavata Purana, Skandha 10, Purvardha chapters 24–27, Sanskrit Wikisource electronic edition, not a transcription of the original text.

इन्द्र-यज्ञ से गोवर्धन-पूजन तक

KATHA 10.24.1–38

शुकदेव परीक्षित को बताते हैं कि व्रज में रहते हुए कृष्ण और बलराम ने गोपों को इन्द्र-यज्ञ की तैयारी करते देखा। कृष्ण ने नन्द और बुजुर्गों से विनम्रता से पूछा कि यह उत्सव किसके लिए है, उसका फल क्या है और उसे कैसे किया जाता है। वे आग्रह करते हैं कि शुभ कार्य समझकर करना चाहिए और अपने लोगों से उसका उद्देश्य छिपाना नहीं चाहिए। नन्द ने कहा कि इन्द्र वर्षा देते हैं; वर्षा से अन्न, पशुओं का चारा और जीविका चलती है। इसलिए लोग वर्षा से मिली सामग्री से उनकी पूजा करते हैं और पूर्वजों की रीति निभाते हैं। नन्द के अनुसार इच्छा, लोभ, भय या द्वेष से परम्परा छोड़ना उचित नहीं।

तब कृष्ण ने कर्म और स्वभाव का तर्क रखा। उन्होंने कहा कि जीव कर्म के अनुसार जन्म, सुख-दुःख और विभिन्न अवस्थाएँ पाते हैं; जिस काम से जीवन चलता है उसका सम्मान करना चाहिए। उन्होंने जीविका छोड़कर दूसरे सहारे की ओर जाने की आलोचना एक कठोर स्त्री-संबंधी उपमा से की, फिर प्राचीन वर्णाधारित कार्य-विभाजन और कृषि, व्यापार, पशुपालन तथा ब्याज की चर्चा की। गोपों की जीविका पशुपालन थी। कृष्ण ने तीन गुणों, प्रकृति में परिवर्तन और बादलों की वर्षा का वर्णन करते हुए पूछा कि इस व्यवस्था में इन्द्र का विशेष हस्तक्षेप क्यों माना जाए। वे नगरवासी नहीं, वन और पर्वत के आश्रित हैं। यह कथा का तर्क है, आधुनिक मौसम-विज्ञान या किसी की विपत्ति का नैतिक निर्णय नहीं।

कृष्ण ने प्रस्ताव किया कि तैयार सामग्री से गायों, ब्राह्मणों और पर्वत का उत्सव हो। अलग-अलग भोजन बने, स्रोत की रीति के अनुसार अग्नि-कर्म और दान हों, अन्य लोगों तथा पशुओं को भी भोजन मिले, गायों को चारा दिया जाए और पर्वत को भोग अर्पित हो। लोग भोजन करके सुसज्जित हों और परिक्रमा करें। उन्होंने नन्द से कहा कि यह सुझाव तभी अपनाएँ यदि उन्हें उचित लगे। नन्द और गोपों ने सहमति दी। आशीर्वाद, अर्पण और गायों को आगे करके परिक्रमा हुई; गोपियाँ गाड़ियों में बैठकर कृष्ण के कार्यों का गायन करने लगीं। कथा में कृष्ण ने विशाल पर्वत-रूप प्रकट करके भोग स्वीकार किया और अपने दूसरे रूप से व्रजवासियों के साथ उस रूप को प्रणाम किया। उन्होंने उपेक्षा करने वालों के लिए पर्वत के दण्ड का उल्लेख भी किया। उत्सव के बाद लोग कृष्ण के साथ व्रज लौटे। सामाजिक पदक्रम, स्त्री-संबंधी उपमा, दान और दण्ड कथा की प्राचीन भाषा हैं, आज के पाठक के लिए नियम या धमकी नहीं।

Shuka tells Parikshit that Krishna, living in Vraja with Balarama, sees the cowherds preparing Indra's rite. Krishna politely asks Nanda and the elders whom the festival honours, what it accomplishes and how it is performed. He asks that a good undertaking be understood rather than concealed from one's own people. Nanda explains that Indra supplies the rain sustaining crops, fodder and livelihoods; people worship him with materials produced through that rain and follow inherited custom. He warns against abandoning tradition through desire, greed, fear or hostility.

Krishna responds with an argument about action and nature. Beings acquire births, pleasures, suffering and changing conditions through karma; people should honour the work sustaining them. He criticises abandoning one's livelihood through a harsh gendered analogy, then discusses ancient varna-based occupations and agriculture, trade, cattle keeping and lending. The cowherds live by cattle keeping. He describes the three gunas, change in nature and rainfall, questioning Indra's special intervention. Their home is the forest and hills, not urban settlements. These arguments belong to the narrative, not modern meteorology or a moral diagnosis of another person's hardship.

Krishna proposes using the prepared materials for a celebration honouring cattle, Brahmins and the hill. Different foods should be prepared; the source describes fire rites and gifts, food for others and animals, fodder for cattle, offerings to the hill, and a procession after the participants eat and dress. He asks Nanda to accept the proposal if it seems suitable. Nanda and the cowherds agree. Blessings and offerings accompany circumambulation with cattle at the front; the women ride in carts singing Krishna's deeds. In the story Krishna manifests a great mountain-form to receive the offerings, while his other form bows with the community. He also voices a warning about the hill punishing neglect. The celebration ends with the return to Vraja. Its social hierarchy, gendered analogy, gifts and punishment language are ancient narrative features, not present-day duties or threats.

वर्षा, शरण और पर्वत का उठना

KATHA 10.25.1–33

इन्द्र को पता चला कि नन्द और गोपों ने उनका यज्ञ नहीं किया। उन्होंने इसे अपमान समझकर क्रोध में प्रलयकारी सांवर्तक बादलों को बुलाया। वे कृष्ण को साधारण, अज्ञानी और अभिमानी बालक बताते हुए गोपों को भी घमण्डी कहते हैं। उनके भाषण में कर्मकाण्ड को अस्थिर नौका और विवेक को छोड़कर संसार पार करने की चेष्टा से जोड़ने वाली उपमा भी आती है। इन्द्र बादलों को गोपों का घमण्ड तोड़ने और पशुधन नष्ट करने का आदेश देते हैं; वे स्वयं ऐरावत और प्रचण्ड पवनों के साथ आने की बात कहते हैं। यह वक्ता का क्रुद्ध दृष्टिकोण है, कथाकार का कृष्ण पर अंतिम निर्णय नहीं।

बादलों ने व्रज पर बिजली, गर्जना, ओलों और भारी वर्षा का प्रहार किया। जल से भूमि के ऊँचे-नीचे भाग छिप गए। ठण्ड और हवा से काँपते लोग तथा पशु कृष्ण के पास आए; बड़े अपने शरीर से बच्चों और बछड़ों को ढक रहे थे। उन्होंने गोकुल के अपने रक्षक से सहायता माँगी। कृष्ण ने समझा कि यह इन्द्र का क्रोध है। उन्होंने अपनी योग-शक्ति से आश्रित समुदाय को बचाने और देवता के अहंकार को शांत करने का संकल्प किया। कथा में अभिमान का निवारण अनुग्रह भी माना गया है, पर यह किसी वास्तविक आपदा को लोगों की धार्मिक भूल का दण्ड बताने का आधार नहीं।

कृष्ण ने एक हाथ से गोवर्धन उठा लिया। उन्होंने माता-पिता और व्रजवासियों को गायों के साथ उसके नीचे स्थान लेने को कहा तथा आश्वासन दिया कि पर्वत गिरेगा नहीं और वर्षा से रक्षा हो गई है। लोग परिवार, पशुधन, आश्रितों और सामान के साथ भीतर आए। कथा के अनुसार कृष्ण भूख-प्यास और आराम की चिंता छोड़कर सात दिन वहीं पर्वत थामे रहे, जबकि व्रजवासी उन्हें देखते रहे। यह असाधारण कथात्मक घटना है, सात दिन भोजन-पानी छोड़ने का अभ्यास नहीं।

कृष्ण की शक्ति देखकर इन्द्र का अभिमान टूट गया और उन्होंने बादलों को रोक दिया। आकाश साफ हुआ, सूर्य दिखाई दिया, पवन-वर्षा थमी और नदी का जल घटने लगा। कृष्ण ने सबको भय छोड़कर बाहर आने को कहा। स्त्रियाँ, बच्चे और वृद्ध अपने पशु तथा गाड़ियों में रखा सामान लेकर धीरे-धीरे निकले। सबके सामने कृष्ण ने पर्वत को फिर उसी स्थान पर रख दिया। लोग प्रेम से मिले; गोपियों ने दही और अक्षत से सम्मान किया। यशोदा, रोहिणी, नन्द और बलराम ने उन्हें गले लगाया और आशीर्वाद दिया। देवगणों के पुष्प, शंख, नगाड़े और गन्धर्वों के गायन से कथा का उत्सव बढ़ा। कृष्ण बलराम और मित्रों के साथ गोकुल लौटे; गोपियाँ उनके कार्यों का गायन करती घर गईं।

Indra learns that Nanda and the cowherds have not performed his sacrifice. Taking offence, he summons the destructive Samvartaka clouds. He disparages Krishna as an ordinary, ignorant and conceited child and accuses the cowherds of arrogance. His speech also uses an analogy of unstable ritual boats and abandoning discernment while attempting to cross worldly existence. He orders the clouds to break the community's pride and destroy its cattle, saying that he will follow on Airavata with powerful winds. These are the angry speaker's judgments, not the narrator's final assessment of Krishna.

Lightning, thunder, hail and torrential rain strike Vraja. Floodwater hides the land's high and low places. People and animals tremble in the cold and wind; adults cover their young with their bodies and seek Krishna's help as Gokula's protector. Krishna recognises Indra's anger and resolves to shelter the community through his divine power while correcting the deity's pride. The narrative treats this correction as grace, not as grounds for blaming real disasters on a community's religious errors.

Krishna raises Govardhan with one hand. He invites his parents and Vraja's people to enter beneath it with their cattle, reassuring them that the hill will not fall and that shelter from the storm is provided. They enter with families, cattle, dependants and belongings. The story says Krishna holds the hill for seven days, setting aside hunger, thirst and the desire for comfort while the people watch him. This extraordinary narrative episode is not a practice of going seven days without food or water.

Astonished by Krishna's power, Indra abandons his pride and stops the clouds. The sky clears, the sun appears, the winds and rain cease, and river water recedes. Krishna tells everyone to leave without fear. Women, children and elders slowly emerge with cattle and cartloads of belongings. Before them all he returns the hill to its former place. The community greets him affectionately; the women honour him with curds and unbroken rice. Yashoda, Rohini, Nanda and Balarama embrace and bless him. Celestial flowers, conches, drums and the Gandharvas' singing extend the celebration. Krishna returns to Gokula with Balarama and his friends, while the women go home singing his deeds.

व्रजवासियों का प्रश्न और नन्द का उत्तर

KATHA 10.26.1–25

पर्वत उठाने की घटना देखकर गोप नन्द के पास आए। वे पूछते हैं कि सात वर्ष का बालक इतनी बड़ी शक्ति कैसे दिखा सकता है और साधारण ग्राम-परिवार में उसका होना इस चमत्कार से कैसे मेल खाता है। उन्होंने पहले की घटनाएँ याद कीं: शिशु कृष्ण ने पूतना के दूध के साथ उसके प्राण भी खींच लिए; रोते हुए पैर की चोट से गाड़ी उलट गई; आकाश में ले जाने वाला तृणावर्त उनके पकड़ने से मारा गया। मक्खन लेने पर माता ने उन्हें ऊखल से बाँधा था, फिर भी दो अर्जुन वृक्ष गिर गए। वन में बकासुर का वध हुआ; बछड़े का रूप लेकर आए आक्रमणकारी को मारकर उसके शरीर से कपित्थ के फल गिराए गए। गधे-रूप दैत्य और उसके साथियों के हटने से तालवन सुरक्षित हुआ; बलराम के द्वारा प्रलम्ब का वध हुआ। गोपों और पशुओं को वनाग्नि से बचाया गया और विषैले सर्प को वश में करके यमुना से निकाला गया। यह पुरानी घटनाओं का कथा-स्मरण है, हिंसा या विषैले जीवों से सामना करने का अभ्यास नहीं।

गोपों ने कहा कि कृष्ण से उनका प्रेम छूटता नहीं और कृष्ण का उनके प्रति स्नेह भी सहज है। फिर भी बालक की आयु और पर्वत धारण की शक्ति के बीच का अंतर उन्हें चकित करता है। नन्द ने उत्तर दिया कि गर्ग ने पहले इस बालक के विषय में जो बताया था, उसे वे सुनाएँगे। गर्ग के अनुसार अलग युगों में उनके श्वेत, लाल और पीले रूप हुए थे और अब कृष्ण रूप है। वसुदेव से संबंध के कारण जानने वाले उन्हें वासुदेव कहते हैं। गुण और कार्यों के अनुसार उनके अनेक नाम तथा रूप हैं।

नन्द ने गर्ग का आश्वासन दोहराया कि यह बालक गोपों का कल्याण करेगा, कठिनाइयों से पार कराएगा और पहले भी उत्पीड़ित सज्जनों का सहायक रहा है। गर्ग ने उनसे प्रेम रखने वालों की रक्षा और गुण, श्री, यश तथा प्रभाव में नारायण-समानता कही थी। नन्द ने निष्कर्ष रखा कि वे कृष्ण को नारायण का अंश मानते हैं। यह गर्ग के बारे में नन्द का कथन और नन्द की धार्मिक समझ है, आधुनिक इतिहास का स्वतंत्र प्रमाण नहीं। गोप सुनकर प्रसन्न हुए और नन्द तथा कृष्ण का आदर किया। अध्याय का अंतिम पद फिर वर्षा में पीड़ित समुदाय की रक्षा और इन्द्र का अभिमान तोड़ने वाले गो-रक्षक के प्रति मंगलभाव व्यक्त करता है। उसके रक्षा-वचन वास्तविक जीवन में अजेयता की गारंटी नहीं हैं।

After the hill-lifting episode the cowherds approach Nanda. They ask how a seven-year-old child could wield such power and how his place in an ordinary village family fits these wonders. They recall earlier deeds: infant Krishna took Putana's life with her milk; a crying child's kick overturned a cart; Trinavarta, who carried him into the sky, died in his grip. Although his mother bound him to a mortar after a butter-taking episode, two Arjuna trees fell. Baka was killed in the forest; an attacker disguised as a calf was killed and used to knock down kapittha fruit. The donkey-shaped demon and his companions were removed, making the palm grove safe; Pralamba was killed through Balarama. The cowherds and cattle were rescued from forest fire, and the venomous serpent was subdued and expelled from the Yamuna. This is the community's recollection of sacred stories, not training in violence or handling dangerous animals.

They describe their inescapable love for Krishna and his spontaneous affection for them, yet remain astonished by the contrast between his age and power. Nanda answers by reporting what Garga had previously told him. Across different ages, Garga said, the child's forms had been white, red and yellow; now he appears in the Krishna form. Those who understand his association with Vasudeva call him Vāsudeva. His qualities and deeds correspond to many names and forms.

Nanda repeats Garga's assurances that this child will bring welfare to the cowherds, carry them through difficulties and has previously helped oppressed good people. Garga also spoke of protection for those attached to him and likeness to Narayana in qualities, splendour, fame and power. Nanda concludes that he considers Krishna a portion of Narayana. This is Nanda's report and religious understanding, not independent modern historical proof. The community responds with joy and honours Nanda and Krishna. The chapter's closing verse again wishes favour from the protector of cattle who sheltered the suffering community and broke Indra's pride. Its protection assurances are not guarantees of invulnerability in real life.

इन्द्र की क्षमा-प्रार्थना और गोविन्द-अभिषेक

KATHA 10.27.1–28

व्रज को वर्षा से बचाने के बाद सुरभि और इन्द्र कृष्ण के पास आए। लज्जित इन्द्र ने एकान्त में अपने तेजस्वी मुकुट से कृष्ण के चरण छुए। उनकी विश्व-अधिपति होने की अकड़ टूट चुकी थी। हाथ जोड़कर उन्होंने कृष्ण की शांत, शुद्ध और रज-तम से मुक्त स्थिति का स्तवन किया। उन्होंने कहा कि लोभ जैसी अज्ञानजन्य प्रवृत्तियाँ कृष्ण को नहीं बाँधतीं; फिर भी वे धर्म की रक्षा और अनुचित आचरण रोकने के लिए दण्ड धारण करते हैं। इन्द्र ने उन्हें जगत का पिता, गुरु, स्वामी और काल कहा तथा उनके विभिन्न रूपों को अभिमान हटाने और लोकहित से जोड़ा।

इन्द्र ने अपना अपराध स्वीकार किया। ऐश्वर्य के गर्व में उन्होंने कृष्ण की शक्ति नहीं समझी और यज्ञ रुकने पर क्रोध से व्रज को आँधी-वर्षा द्वारा नष्ट करना चाहा। उन्होंने क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि ऐसी दुर्बुद्धि फिर न लौटे। वासुदेव-कृष्ण को प्रणाम करके वे उनके अवतार को पृथ्वी का भार घटाने और भक्तों के हित से जोड़ते हैं। इन्द्र कहते हैं कि उनकी योजना विफल होना और अभिमान टूटना ही उन पर अनुग्रह हुआ; वे अब कृष्ण को गुरु और आत्मस्वरूप मानकर शरण लेते हैं।

कृष्ण ने उत्तर दिया कि यज्ञ का रुकना इन्द्र को उनकी याद दिलाने और ऐश्वर्य के मद से जगाने के लिए था। उन्होंने अनुग्रह हेतु संपत्ति से वंचित करने का भी धार्मिक कथन किया, फिर इन्द्र को अपने अधिकार के काम में लौटने और अहंकार छोड़ने को कहा। यह कथा की ईश्वर और सुधार संबंधी भाषा है। इससे वास्तविक गरीबी, आर्थिक नुकसान या आपदा को दिव्य दण्ड अथवा किसी की भलाई का प्रमाण नहीं कहा जा सकता।

इसके बाद सुरभि ने अपने वंश के साथ कृष्ण का अभिवादन किया। उसने उन्हें विश्वात्मा, गोप-रूप में प्रकट स्वामी और गायों तथा सज्जनों का आश्रय कहा। ब्रह्मा के निर्देश का उल्लेख करके उसने उन्हें अपना इन्द्र अभिषिक्त करने की इच्छा कही। कथा में सुरभि के दूध और ऐरावत द्वारा लाए आकाशगंगा के जल से अभिषेक हुआ; इन्द्र और देवर्षियों ने उन्हें गोविन्द नाम से सम्मानित किया। नारद, तुम्बुरु और अन्य दिव्य गायक आए, देवांगनाएँ नाचीं और पुष्प बरसे। कथा गायों के बहुत दूध देने, नदियों के विविध रस, वृक्षों से मधु, बिना जोते उगते पौधों और पर्वतों के रत्नों का अलौकिक चित्र देती है। स्वभाव से क्रूर जीव भी निर्वैर हो गए। अंत में कृष्ण की अनुमति लेकर इन्द्र देवताओं के साथ अपने लोक लौटे। यही चयनित गोवर्धन

प्रसंग का समापन है; दूध, जल, संपन्नता और शांति के चमत्कार आज के लिए विधि, पर्यावरणीय तथ्य या लाभ की गारंटी नहीं हैं।

After Vraja is sheltered from the storm, Surabhi and Indra approach Krishna. Ashamed, Indra comes privately and touches Krishna's feet with his radiant crown. His pride as ruler of the worlds has collapsed. With folded hands he praises Krishna's peaceful purity, free from rajas and tamas. Greed and other ignorance-born tendencies do not bind Krishna, he says, yet Krishna bears corrective authority to protect dharma and restrain wrongdoing. He calls him the world's father, teacher, ruler and Time, connecting his manifestations with public welfare and the removal of pride.

Indra admits his offence. Blinded by power, he had not understood Krishna and tried to destroy Vraja through wind and rain when his sacrifice was interrupted. He asks forgiveness and prays that such distorted judgment will not return. Bowing to Vasudeva-Krishna, he connects the incarnation with relieving the earth's burden and supporting devotees. He now regards the failure of his plan and collapse of his pride as grace, taking shelter in Krishna as teacher and inner self.

Krishna replies that interrupting the sacrifice was intended to recall Indra to him and awaken him from intoxication with power. He also makes a theological statement about depriving someone of wealth as grace, then tells Indra to return to his proper responsibilities without arrogance. This is the narrative's language of divine correction. It does not establish that real poverty, financial loss or disaster is divine punishment or proof of benefit.

Surabhi then greets Krishna with her offspring, praising him as universal self, lord appearing as a cowherd and refuge of cattle and good people. Invoking Brahma's direction, she proposes consecrating him as their Indra. In the story, her milk and celestial Ganga water carried by Airavata are used in the consecration; Indra and the divine sages honour Krishna as Govinda. Narada, Tumburu and other celestial musicians arrive, divine women dance and flowers fall. The account depicts abundant milk, rivers carrying various essences, honey from trees, uncultivated plants, jewels in hills and even naturally fierce creatures becoming peaceful. Finally, with Krishna's permission, Indra returns to his realm with the gods. This concludes the selected Govardhan episode. Its milk, water, abundance and peace imagery is not a household procedure, environmental fact or guarantee of gain.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Govardhan Puja Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Bhagavata Purana 10.24–27, revisions 183696 / 97324 / 97328 / 97339, linked in Sources. Source electronic text: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose retelling, Roman-Hindi rendition, English rendition, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These contributions are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to this retelling and its language layers, not the site's code or unrelated content. GRETIL is comparison-only and its text is not included.

Copyright 2026 Valkala Editorial (original retelling and language layers); shared under CC BY-SA 4.0. Electronic source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.